ऋतुसंहार

मूल
कालिदास

अनुवाद
चिरंजीव दास

ासंती प्रकाशन

5

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

ऋतुसंहार

मूल
कालिदास

अनुवाद
चिरंजीव दास

हरकिशोर दास
समलाईगुड़ी, पं. चिरंजीवदास मार्ग
रायगढ़ (छ.ग.) 496001
मो. 09993775455

वासंती प्रकाशन

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

© सर्वाधिकार अनुवादक के अधीन

प्रथम संस्करण : १९८८

मूल्य :

प्रकाशक
हरकिशोर दास
समलाई गुड़ी, नयागंज,
रायगढ़, ४९६००१

मुद्रक
विमल प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

RITUSAMHARA
of
KALIDASA
with translation in Hindi poetry by Chiranjiv Das

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

आमुख

ऋतुसंहार महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना मानी जाती है. कालिदास की विश्वविख्यात कृतियों —— रघुवंश, कुमारसंभव और मेघदूत (तीनों काव्य) और अभिज्ञान शाकुंतल, विक्रमोर्वशीय और मालविकाग्निमित्र (तीनों नाटक) — का रचना-सौष्ठव इस कृति में परिलक्षित नहीं होता. अतएव कुछ लोग इसे कालिदास की कृति ही नहीं मानते. किन्तु ऐसे लोगों की संख्या वहुत कम है.

ऋतुसंहार में कालिदास का उत्कृष्ट काव्य-वैभव भले ही दृष्टिगोचर न हो किन्तु उन्होंने ग्रीष्म (ज्येष्ठ-आषाढ़), वर्षा (श्रावण-भाद्रपद), शरत् (आश्विन-कार्तिक), हेमन्त (मार्गशीर्ष-पौष), शिशिर (माघ-फाल्गुन) और वसन्त (चैत्र-वैशाख) इन छः ऋतुओं का जो मनोहारी वर्णन प्रस्तुत किया है वह अप्रतिम है. ऋतुओं के आवर्त्तन के साथ-साथ प्रकृति के परिवेश में और मानव-मन में जो परिवर्त्तन होते हैं उन्होंने कवियों को सदैव से आकर्षित किया है और कवियों ने सदैव ही उस नैसर्गिक वर्ण-वैचित्र्य को और भाव-सौन्दर्य को शब्दों में बांधने की चेष्टा की है. लोकगीतों में भी बारह मासों और छः ऋतुओं का वर्णन बहुधा मिलता रहता है. ऋतुसंहार इसी परिपाटी में एक अनुपम वाणी-विलास है.

क्या संस्कृत-साहित्य में और क्या अन्य भाषाओं में ऋतुसंहार जैसा ऋतुओं से सम्बन्धित सरस-मधुर रचना मिलना दुष्कर है. हिन्दी में इस काव्य का पद्य में रूपान्तरण शायद अभी तक नहीं हुआ है. आशा है इस प्रयास से न केवल इस अभाव की पूर्ति होगी वरं इससे हिन्दी काव्य-रसिकों — विशेषकर संस्कृत-साहित्य-प्रेमियों का —,पर्याप्त मनोरंजन भी होगा.

— चिरंजीव दास

समलाई गुड़ी,
नया गंज, रायगढ़.
४९६ ००१

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

प्रथम सर्ग

ग्रीष्म - वर्णन

(१)

सूर्य अति प्रचंड और शशि अति स्पृहणीय कांत,
सदा स्नान से छिछले जल के संचय अशांत,
रम्य अति दिनांत और शांत-क्षांत काम लिये
आया लो ! ग्रीष्म प्रिये !

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः
सदावगाहक्षतवारिसंचयः ।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो
निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

चंद्र-धौत निशियां तम का जिनमें लेश नहीं,
अद्भुत-जलयंत्रयुक्त मंदिर अभिराम कहीं,
तरह-तरह के मणि सब,
सरस सुखद चंदन-द्रव
करते अब प्रिये ! भोग
सुखी लोग.

निशाः शशाङ्कक्षतनीलराजय·
क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम् ।
मणिप्रकाराः सरसं च चन्दनं
शुचौ प्रिये ! यान्ति जनस्य सेव्यताम् ॥

(३)

सुरभित अति रम्य छतों पर निर्भर रसिक प्रबर
प्रिया-मुखोच्छ्वास-पवन-कंपित मधु सेवन कर
कामोन्मादक सुन वर तंत्रिगीत
कामीजन प्रिये ! बिताते निशीथ.

सुवासितं हर्म्यतलं मनोहरं
प्रियामुखोच्छ्वासविकम्पितं मधु ।
सुतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपनं
शुचौ निशीथेऽनुभवन्ति कामिनः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

मंजु मेखला-दुकूल से सजा नितंब-पक्ष,
हार-अलंकारों से चंदन से स्वीय वक्ष,
स्नान-गंध-द्रव्यों से सुरभित कर कच-कलाप
हरती हैं कामिनियां रसिकों का ग्रीष्म-ताप.

नितम्बबिम्बैः सदुकूलमेखलैः
स्तनैः सहाराभरणैः सचन्दनैः ।
शिरोरुहैः स्नानकषायवासितैः
स्त्रियो निदाघं शमयन्ति कामिनाम् ॥

(५)

लाक्षा-रस-रंजित कर
नूपुर से सज्जित कर
मृदुल चरण,
पद-पद में रच मराल-कूजन-स्वन
रमणीगण
करतीं अब जन-जन के उर-उर में मदन-वरण

नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितै-
र्नितम्बिनीनां चरणैः सनूपुरैः ।
पदे पबे हंसरुतानुकारिभि-
र्जनस्य चित्तं क्रियते समन्मथम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(६)

चंदन-रस-र्चचित जो,
हिम-से ही श्वेत श्रेष्ठ हारों से अर्चित जो
तुंग स्तनों के अंचल
और स्वर्ण-रशनायुत पृथु नितंब
बिन बिलंब
करते किसके न चित्त को चंचल ?

पयोधराश्चन्दनपङ्कचर्चिता-
स्तुषारगौरार्पितहारशेखराः ॥
नितम्बदेशाश्च सहेममेखलाः
प्रकुर्वते कस्य मनो न सोत्सुकम् ॥

(७)

अंग-संधियों में अब स्वेदोद्गम के कारण
तुंगस्तना
सयौवना
प्रमदायें कर सब चिर कठिन वस्त्र का वारण
उन्नत उर पर धरतीं
सूक्ष्म वसन, रसिकों का मन हरतीं.

समुद्गतस्वेदचिताङ्गसंधयो
विमुच्य वासांसि गुरूणि सांप्रतम् ।
स्तनेषु तन्वंशुकमुन्नतस्तना
निवेशयन्ति प्रमदाः सयौवनाः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

चंदन-जल से भींगे हुए सघन
व्यजनों से कर चिर उत्पन्न पवन,
हारों से मंडित कर
उन्नत वर वक्ष सुघर,
वीणा-स्वर साथ प्रचुर गीत-मधुर-रस उमगा
सुप्त मदन को मानों रहीं जगा.

सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिलैः
सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः ।
सवल्लकीकाकलिगीतनिःस्वनै-
र्विबोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः ॥

(९)

शुभ्र छतों के ऊपर सुख-शायित-रमणी-मुख
देख चंद्र चिर अतंद्र अति उत्सुक
रात्रि-शेष में अब होता ज्यों घन !
लज्जावश पांडुवदन.

सितेषु हर्म्येषु निशासु योषितां
सुखप्रसुप्तानि मुखानि चन्द्रमाः ।
विलोक्य नूनं भृशमुत्सुकश्चिरं
निशाक्षये याति ह्रियेव पाण्डुताम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१०)

दुखी प्रवासी जनगण
प्रिया-विरह-अनल-दग्ध जिनके मन
सकते भी देख नहीं
सूर्यातप से अतीव तप्त मही
उठती रहती हैं जिससे पल-पल
दु:सह्य आँधियाँ प्रबल.

असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला
प्रचण्डसूर्यातपतापिता मही ।
न शक्यते द्रष्टुमपि प्रवासिभिः
प्रियावियोगानलदग्धमानसैः ॥

(११)

प्रखर-सूर्य-आतप से तप्त विकल
प्रबल प्यास से जिनके तालु शुष्क हैं मृगदल
कज्जल-सम नील व्योम देख दूर से सुन्दर
समझ उसे जल जाते दौड़ वनांतर में खर.

मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं
तृषा महत्या परिशुष्कतालवः ।
वनान्तरे तोयमिति प्रधाविता
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA
निरीक्ष्य भिन्नाञ्जनसंनिभं नभः ॥

(१२)

लीलायुत-हास-सहित नव-विलासवतियां धन !
प्रवासियों का लेतीं सित कटाक्ष से हर मन,
देतीं कर काम-विकल
संध्या ज्यों अर्धचंद्र-भूषण धर.

सविभ्रमैः सस्मितजिह्मवीक्षित-
र्विलासवत्यो मनसि प्रवासिनाम् ।
अनङ्गसंदीपनमाशु कुर्वते
यथा प्रदोषाः शशिचारुभूषणाः ॥

(१३)

रवि-किरणों से अतीव तप्त धूल में जलकर
पथ में अव नीचे मुख कर चलकर
हाँफ-हाँफ
सकुटिल-गति विकल साँप
छिपता जाकर मयूर-पुच्छ-तले
प्रिय अबले !

रवेर्मयूखैरभितापितो भृशं
विदह्यमानः पथि तप्तपांसुभिः ।
अवाङ्मुखो जिह्मगतिः श्वसन्मुहुः
फणी मयूरस्य तले निषीदति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१४)

प्रबल प्यास के कारण हतविक्रम,
गतउद्यम
हाँफ रहा वार-वार मुख जो सुविशाल खोल,
हिलते केसर जिसके, डोल रही जीभ लोल—
ऐसा मृगराज आज
गजदल को मारता न यद्यपि वे प्रिये ! पास.

तृषा महत्या हतविक्रमोद्यमः
श्वसन्मुहुर्दूरविदारिताननः ।
न हन्त्यदूरेऽपि गजान्मृगेश्वरो
विलोलजिह्वश्चलिताग्रकेसरः ॥

(१५)

सूख सूँड़ों में निज शीतल जल ग्रहण किये
तीक्ष्ण सूर्य-किरणों से अतिशय संतप्त प्रिये !
तीव्र-तृषा-पीड़ित गज जो जल-कांक्षा करते
सिंह से न भी डरते.

विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसो
गभस्तिभिर्भानुमतोऽनुतापिताः ।
प्रवृद्धतृष्णोपहता जलार्थिनो
न दन्तिनः केसरिणोऽपि बिभ्यति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१६)

अग्नि-सदृश सूर्य-करों से जिनके गात क्लांत
चित्त क्षांत,
पास पड़े मुँह डाले बर्ह-जटा में जिनकी
मारते न साँपों को मोर सखी !

हुताग्निकल्पैः सवितुर्गभस्तिभिः
कलापिनः क्लान्तशरीरचेतसः ।
न भोगिनं घ्नन्ति समीपवर्तिनं
कलापचक्रेषु निवेशिताननम् ॥

(१७)

मोथे से पूर्ण और सूखी कीचड़ से युत
वन्य शूकरों से जो खोदा जा रहा बहुत
ऐसे इस पोखर में
स्थित यह शूकर का दल
रवि-कर से तप्त विकल
मानों है चाह रहा घुसना धरणीतल में.

सभद्रमुस्तं परिशुष्ककर्दमं
सरः खनन्नायतपोतृमण्डलैः ।
रवेर्मयूखैरभितापितो भृशं
वराहयूथो विशतीव भूतलम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१८)

रवि के अति तीक्ष्ण करों से प्रतप्त भेक विकल
पंकिल-जलवाले सर से तत्क्षण फुदक उछल
तृषित सर्प के फण के छत्र-तले डर-भय तज
जाता है बैठ सहज.

विवस्वता तीक्ष्णतरांशुमालिना
सपङ्कतोयात्सरसोऽभितापितः ।
उत्प्लुत्य भेकस्तृषितस्य भोगिनः
फणातपत्रस्य तले निषीदति ॥

(१९)

कमल-नालदल उखाड़ कर समस्त,
रौंद मछलियों को कर विपद्ग्रस्त,
सारसदल को सारे डरा भगा,
आपस में रण उमगा
मत्त हाथियों के दल
कर्दममय कर देते ताल सकल.

समुद्धृताशेषमृणालजालकं
विपन्नमीनं द्रुतभीतसारसम् ।
परस्परोत्पीडनसंहतैर्गजैः
कृतं सरः सान्द्रविमर्दकर्दमम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२०)

जिनकी शिर-मणि-प्रभा रही चमक,
रवि की किरणों में है रही दमक,
जिनकी जिह्वायें दो निकल लोल
मारुत को चाट-चाट रहीं डोल —
गरल, अनल और सूर्य-आतप से तप्त सांप
मारते न मंडूकों को प्यासे स्वयं आप.

रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभो
विलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः ।
विषाग्निसूर्यातपतापितः फणी
न हन्ति मण्डूककुलं तृषाकुलः ॥

(२१)

पर्वत के गह्वर से निकल-निकल
वनभैंसें तृषा-विकल
फेनयुक्त मुख विशाल
उठा, हिला लाल-लाल जीभें अपनी निकाल
देख रही
हैं जल की ओर सखी !

सफेनलोलायतवक्त्रसंपुटं
विनिःसृतालोहितजिह्वमुन्मुखम् ।
तृषाकुलं निःसृतमद्रिगह्वरा-
दवेक्ष्यमाणं महिषीकुलं जलम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२२)

दावानल में जलकर शस्य कि जिसके विवर्ण,
प्रबल पवन में उड़ते जिसके बहु शुष्क पर्ण,
सूर्य-ताप से जिसके सूख गये ताल-निचय —
ऊँचे से लखने पर
विपिन-प्रांत अब निर्भर
देते भय.

पटुतरववदाहोच्छुष्कसस्यप्ररोहाः
परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णाः ।
दिनकरपरितापक्षीणतोयाः समन्ता-
द्विदधति भयमुच्चैर्वीक्ष्यमाणा वनान्ताः ॥

(२३)

ठूँठों पर विहगों का वर्ग रहा हाँफ सखी !
श्रांत-क्लांत वानर सब
गिरि के कुंजों में अब
जाते चुपचाप सखी !
तृषित नील गायों के दल के दल
घूम रहीं, ढूँढ रही हैं सब जल,
शरभ सबल
पीते कूपों का जल.

श्वसिति विहगवर्गः शीर्णपर्णद्रुमस्थः
कपिकुलमुपयाति क्लान्तमद्रेर्निकुञ्जम् ।
भ्रमति गवययूथः सर्वतस्तोयमिच्छन्
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA
छरभकुलमजिह्मं प्रोद्धरत्यम्बु कूपात् ॥

(२४)

निर्मल जो नव-कुसुम्भ-पुष्प-भाँति
सुंदर सिंदूर-कांति
प्रबल पवन के कारण वेगपूर्ण,
तट-तरुलतिकालिंगन-व्यग्र तूर्ण
दिशि-दिशि में व्याप्त अग्नि दग्ध कर रही अवनी
अब सजनी !

विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा
प्रबलपवनवेगोद्भूतवेगेन तूर्णम् ।
तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन
दिशि दिशि परिदग्धा भूमयः पावकेन ॥

(२५)

गिरि-कंदर के भीतर पवन-संग जा जलता,
सूखे बांसों के वन में निनाद कर चलता,
घासों के बीच तुरत सुलग फैल
डरा मृगों को छाता दावानल शैल-शैल.

ज्वलति पवनवृद्धः पर्वतानां दरीषु
स्फुटति पटुनिनादैः शुष्कवंशस्थलीषु ।
प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन
ग्लपयति मृगवर्गं प्रान्तलग्नो दवाग्निः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२६)

सघन शाल्मली-वन में प्रसर बिखर,
वृक्ष-कोटरों में चिर स्वर्ण-सदृश चमक निखर,
पक्व-पत्रयुत ऊँचे तरुओं पर डोल-डोल
पवन-संग घूम रहीं वन-वन में अग्नि लोल.

बहुतर इव जातः शाल्मलीनां बनेषु
स्फुरति कनकगौरः कोटरेषु द्रुमाणाम् ।
परिणतदलशाखानुत्पतन्प्रांशुवृक्षा-
न्भ्रमति पवनधूतः सर्वतोऽग्निर्वनान्ते ।।

(२७)

सिंह, नील गायें, गज दावानल-तप्त-गात
द्वन्द्वभाव छोड़ सकल मित्र-सदृश एक साथ
अग्नि-ताप हेतु विकल
दरियों से शीघ्र निकल
उतर सजनि ! जाते हैं नदियों में —
विपुल-पुलिनवतियों में.

गजगवयमृगेन्द्रा वह्निसंतप्तदेहाः
सुहृद इव समेता द्वन्द्वभावं विहाय ।
हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षा-
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA
द्विपुलपुलिनदेशान्निम्नगां संविशन्ति ।।

(२८)

कमल-कुसुमपूर्ण जलाशय सुन्दर,
पाटल-मृदु-सुरभिपूर्ण उपवन वर,
दिन में सुख-सलिल-स्नान,
निशि में वर हार, चंद्र का वितान,
कामिनियों-सहित रम्य ग्रीष्म-काल यह उदार
काटो कर निशियों में रूपमती !
अयि सुललित-गीतवती !
हर्म्य-पृष्ठ पर विहार.

कमलवनचिताम्बुः पाटलामोदरम्यः
सुखसलिलनिषेकः सेव्यचन्द्रांशुहारः ।
व्रजतु तव निदाघः कामिनीभिः समेतो
निशि सुललितगीते ! हर्म्यपृष्ठे सुखेन ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA
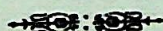
द्वितीय सर्ग

प्रावृट्-वर्णन

(१)

नव-जलकणयुक्त जलद
जिसका मदमत्त द्विरद,
तड़ित्-पताका फरहर,
वज्र-शब्द मर्दल-स्वर —
आया बहु-द्युति-झलमल नृप-सा संभार लिये
कामीजन का अति प्रिय वर्षा का काल प्रिये !

ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जर-
स्तडित्पताकोऽशनिशब्दमर्दलः ।
समागतो राजवदुद्धतद्युति-
र्घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

कहीं लिये नीलोत्पल-पत्र-कांति,
कहीं प्रिये ! होकर वह काजल की ढेर भाँति,
कहीं गर्भवती स्त्रियों के स्तन-सी छवि प्रकटा
छाई नभ में सजनी ! घोर घटा.

नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः
क्वचित्प्रभिन्नाञ्जनराशिसंनिभैः ।
क्वचित्सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः
समाचितं व्योम घनैः समन्ततः ॥

(३)

माँग रहे जिसे पिपासाकुल चातक अविरत
होकर ऐसे जल के विपुल भार से अवनत,
मृदु-मृदु धारा बरसा,
मन्द्र स्वनों से श्रुतियों को सरसा
मंथर-गति
चलते घन सुंदर अति.

तृषाकुलैश्चातकपक्षिणां कुलैः
प्रयाचितास्तोयभरावलम्बिनः ।
प्रयान्ति मन्दं बहुधारवर्षिणो
बलाहकाः श्रोत्रमनोहरस्वनाः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

वज्र-मुरज-गर्जन भर,
तड़ित्-लता-ज्यावाला इंद्रचाप कर में धर,
तीक्ष्ण वारि-धारों के बाण चला निर्दय वन
बेध रहे प्रवासियों के मन घन.

बलाहकाश्चाशनिशब्दमर्दलाः
सुरेन्द्रचापं दधतस्तडिद्गुणम् ।
सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकै-
स्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम् ॥

(५)

नीलम-सम
तृण-अंकुर से अनुपम,
नव स्फुट कंदलिकाओं से सुन्दर,
बीरबहूटीदल से सजधजकर
शोभित ऐसे अवनी
मानों हो रंग-बिरंगे-मणि-भूषित रमणी.

प्रभिन्नवैदूर्यनिभैस्तृणाङ्कुरैः
समाचिता प्रोत्थितकन्दलीदलैः ।
विभाति शुक्लेतररत्नभूषिता
वराङ्गनेव क्षितिरिन्द्रगोपकैः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(६)

सदा मनोहर मंगल
हर्ष-विकल मोर सकल
उत्कट केका-ध्वनि कर,
फला कर दीर्घ विपुल पुच्छ-निकर
संभ्रमयुत चुम्बन-परिरंभण-हित-व्यग्र मत्त
हुए सजनि ! सहज नृत्य में प्रवृत्त.

सदा मनोज्ञं स्वनदुत्सवोत्सुकं
विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम् ।
ससंभ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलं
प्रवृत्तनृत्यं कुलमद्य बर्हिणाम् ॥

(७)

प्रबल-वेगयुक्त मलिन जल से निज यहाँ-वहाँ
तट के तरु गिरा ढहा
जलधि ओर जातीं नदियाँ दिखला लीलायें
सखि ! ज्यों दुःशीलायें.

निपातयन्त्यः परितस्तटद्रुमा-
न्प्रवृद्धवेगैः सलिलैरनिर्मलैः ।
स्त्रियः सुदुष्टा इव जातविभ्रमाः
प्रयान्ति नद्यस्त्वरितं पयोनिधिम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

मृदुल मसृण तृण-अंकुर हरे नये
ललित हरिणियों से जो चरे गये
औ तरुदल
नवल पल्लवों से जो लदे सकल —
शोभित होकर इनसे विंध्य देश के ये वन
लेते बरबस हर मन.

तृणोत्करैरुद्गतकोमलाङ्कुरै-
विचित्रनीलैर्हरिणीमुखक्षतैः ।
वनानि वैन्ध्यानि हरन्ति मानसं
विभूषितान्युद्गतपल्लवैर्द्रुमैः ॥

(९)

आनन में जिनके वर लोल गोल उत्पल-दृग
डोल रहे यहाँ-वहाँ जहाँ भीत सचकित मृग
सिकतामय वन-प्रांगण
करते किसका न समुत्सुक सखि ! मन ?

विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननै-
र्मृगैः समन्तादुपजातसाध्वसैः ।
समाचिता सैकतिनी वनस्थली
समुत्सुकत्वं प्रकरोति चेतसः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१०)

मेघ गरजते चिर भी
सघन-तिमिरपूर्ण निशा है फिर भी
मार्गों से उन जिनको दीप्त किये दामिनियां
जातीं हैं प्रेमवती अब अभिसारिका स्त्रियाँ.

अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता पयोमुचा
घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि ।
तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः
प्रयान्ति रागादभिसारिकाः स्त्रियः ॥

(११)

भीम-मंद्र-गर्जनवाले घन से,
विद्युत् की तड़पन से
मन जिनके हैं अति उद्विग्न प्रखर
वनितायें लेती हैं अब बरबस
अपराधी पतियों को भी कस-कस
सजनि ! शयन पर निर्भर

पयोधरैर्भीमगभीरनिस्वनै-
स्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम् ।
कृतापराधानपि योषितः प्रिया-
न्परिष्वजन्ते शयने निरन्तरम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१२)

लोचन-इंदीवर से झर-झर जलकण सकरुण
सिंचित कर बिंब-अधर-पल्लव अभिराम अरुण
माल्य-अलंकार-और-अनुलेपन-विरहित अब
अति निराश प्रोषितपतिकायें सब.

विलोचनेन्दीवरवारिविन्दुभि-
निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः ।
निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः
स्थिता निराशाः प्रमदाः प्रवासिनाम् ॥

(१३)

तिरते जिसमें तृण-रज-कीट, परम पांडुर अति,
सर्प-सदृश क्षिप्र तरल जिसकी खर कुंचित गति,
जिसे देखता भय-कंपित मेंढकदल सारा
नीचे की ओर वह रही नूतन जल-धारा.

विपाण्डुरं कीटरजस्तृणान्वितं
भुजंगवद्वक्रगतिप्रसर्पितम् ।
ससाध्वसैर्भेककुलैर्निरीक्षितं
प्रयाति निम्नाभिमुखं नवोदकम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१४)

कर्ण-मधुर गुंजन भर उत्सुक अति भृंग मूढ़
झरे-हुए-दलवाली नलिनी का संग छोड़
नृत्यशील शिखियों के वर्हं-चक्र पर झलमल
गिरते हैं समझ उसे सद्य कमल.

विपत्रपुष्पां नलिनीं समुत्सुका
विहाय भृङ्गाः श्रुतिहारिनिःस्वनाः ।
पतन्ति मूढाः शिखिनां प्रनृत्यतां
कलापचक्रेषु नवोत्पलाशया ॥

(१५)

नव-जलधर-गर्जन-रव सुनकर जो मदोन्मत्त
रह-रह चिग्घाड़ रहे वन के जो गज समस्त
मद-जल से सुपर्याप्त
भृंगों-सह होने से परिव्याप्त
उनके वर गण्ड प्रिये !
नीलोत्पल-प्रभा लिये.

वनद्विपानां नववारिदस्वनै-
र्मदान्वितानां ध्वनतां मुहुर्मुहुः ।
कपोलदेशा विमलोत्पलप्रभाः
सभृङ्गयूथैर्मदवारिमिश्रिताः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१६)

श्वेत-कमल-सम जो घन रहे निखर
छूते हैं जिनके उत्तुंग शिखर,
निर्झर वर
झरते जिनसे झर-झर,
नृत्य-निरत शिखियों से अविरत जो आकुलतर
जन-मन को उत्सुक करते भूधर.

सितोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोपलाः
समाचिताः प्रस्रवणैः समन्ततः ।
प्रवृत्तनृत्यैः शिखिभिः समाकुलाः
समुत्सुकत्वं जनयन्ति भूधराः ॥

(१७)

नव-पुष्पित नीप, साल, अर्जुन वर
और केतकी-तरु-कानन धुन कर,
ले उनसे मंद-मंद
मृदुल गंध,
जल-कणयुत वारिद के संग विहर
होकर अति शीतलतर
करता किसको न समीरण उत्सुक
देकर सुख ?

कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवनं
विकम्पयंस्तत्कुसुमाधिवासितः ।
ससीकराम्भोधरसङ्गशीतलः
समीरणः कं न करोति सोत्सुकम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१८)

कुंतल छूते जिनके श्रोणी के कूल-अंश,
गंधयुक्त कुसुम बने जिनके कर्णावतंस,
हारों से युक्त सजनि ! स्तन जिनके,
मधु से आनन जिनके —
विलासियों के मन में
उपजातीं प्रीति स्त्रियां हैं क्षण में.

शिरोरुहैः श्रोणितटावलम्बिभिः
कृतावतंसैः कुसुमैः सुगन्धिभिः ।
स्तनैः सहारैर्वदनैः ससीधुभिः
स्त्रियो रतिं संजनयन्ति कामिनाम् ॥

(१९)

तड़ित्-लता-इंद्रधनुष-भूषित वर,
तोय-भार-नमित पयोधर सुन्दर
और सुघर कामिनियां कटि में कांची लटका
कर्ण-युगल में मणि-कुंडल अटका
प्रवासियों के मन हर
लेतीं युगपत् सत्वर.

तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः
पयोधरास्तोयभरावलम्बिनः ।
स्त्रियश्च काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वला
हरन्ति चेतो युगपत्प्रवासिनाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२०)

नीप, वकुल और केतकी के बहु माल सजा
सिर पर उनको उलझा,
अर्जुन की मंजरियों से निज इच्छानुकूल
रचती हैं स्त्रियां आज कर्णपूर.

मालाः कदम्बनवकेसरकेतकीभि-
रायोजिताः शिरसि बिभ्रति योषितोऽद्य ।
कर्णान्तरेषु ककुभद्रुममञ्जरीभि-
रिच्छानुकूलरचितानवतंसकांश्च ॥

(२१)

कृष्ण-अगुरु-चंदन से चर्चित कर अंगराजि,
पुष्प-कर्णपूरों से सुरभित कर केश-पाश,
संध्या में सुनकर धनि !
मेघों की गर्जन-ध्वनि
तज गुरु-जन-निकट-देश
करती हैं कामिनियां शय्या-गृह में प्रवेश.

कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्‌गचः
पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः ।
श्रुत्वा ध्वनिं जलमुचां त्वरितं प्रदोषे
शय्यागृहं गुरुगृहात्प्रविशन्ति नार्यः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२२)

नीलकमल-पत्र-वर्ण उच्च सलिल-भार-नम्र
मृदुल-पवन-कंपमान मंद-मंद चलित कम्र
इंद्रधनुष से सजकर जलधर मानों निर्भर
विरहाकुल पथिक-प्रियाओं का लेते मन हर.

कुवलयदलनीलैरुन्नतैस्तोयनम्रै-
मृ दुपवनविधूतैर्मन्दमन्दं चलद्भिः ।
अपहृतमिव चेतस्तोयदैः सेन्द्रचापैः
पथिकजनवधूनां तद्वियोगाकुलानाम् ॥

(२३)

पुलकित-मुकुलित कदंब मिस मानों हर्ष-लग्न,
मंद पवन से हिलतीं
यहां-वहां जिनकी डालें डुलतीं
तरुओं के मिस मानों नृत्य-मग्न,
खिली केतकी के कांटे जिसका हास कांत
नव-जल के वर्षण से विगत-ताप अब वनांत.

मुदित इव कदम्बैर्जातपुष्पैः समन्ता-
त्पवनचलितशाखैः शाखिभिर्नृत्यतीव ।
हसितमिव विधत्ते सूचिभिः केतकीनां
नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापो वनान्तः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२४)

सजा मालतीयुत-नव-बकुल-माल
वधुओं के शिर पर शृंगार-जाल,
खिली जुही, नव कदंब के लेकर चुने फूल
रच उनके कर्णपूर
कांत-सदृश सरस-हृदय
करता व्यवहार प्रिये ! मेघ-समय.

शिरसि बकुलमालां मालतीभिः समेतां
विकसितनवपुष्पैर्यूथिकाकुड्मलैश्च ।
विकचनवकदम्बैः कर्णपूरं वधूनां
रचयति जलदौघः कान्तवत्काल एषः ॥

(२५)

पीन उरोजों पर वर हार-पाश,
पृथुल श्रोणियों पर ऋजु श्वेत वास,
देह-मध्य-स्थलियों पर
ललित-भंग-वलियों पर
नव-जलकण के कारण
उद्गत रोमांचराजि वधुएँ करतीं धारण.

दधति वरकुचाग्रैरुन्नतैर्हारयष्टिं
प्रतनुसितदुकूलान्यायतैः श्रोणिबिम्बैः ।
नवजलकणसेकादुद्गतां रोमराजीं
ललितवलिविभङ्गैर्मध्यदेशैश्च नार्यः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२६)

नव-जलकण-संग हेतु होकर अति शीतलतर,
कुसुम-भार-आनत तरुओं को उल्लासित कर,
फुल्ल केतकी के रज से ले मधु-गंध धीर
हरता है पांथजनों का मन कोमल समीर.

नवजलकलसङ्गाच्छीततामादधानः
कुसुमभरनतानां लासकः पादपानाम् ।
जनितरुचिरगन्धः केतकीनां रजोभिः
परिहरति नभस्वान् प्रोषितानां मनांसि ॥

(२७)

"जब हम जल-भार-नमित
उच्च हमारा तब यह आश्रय अविराम अमित"
यह कहकर
जल से अवनत जलधर
देते हैं जल बरसाकर चिर आल्हादित कर
ग्रीष्म-कठिन-ज्वाल-तप्त विंध्य-अचल को निर्भर.

जलधरविनतानामाश्रयोऽस्माकमुच्चै-
रयमिति जलसेकैस्तोयदास्तोयनम्राः ।
अतिशयपरुषाभिर्ग्रीष्मवह्नेः शिखाभिः
समुपजनिततापं ह्लादयन्तीव विन्ध्यम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२८)

बहु-गुण-रमणीय, कामिनी-मनहारी उदार,
तरु-विटप-लताओं का बांधव प्रिय निर्विकार,
वर्षा का काल प्राणियों का जो प्राणभूत
पूर्ण सकल कर दे तव इच्छायें इष्ट पूत.

बहुगुणरमणीयः कामिनीचित्तहारी
तरुविटपलतानां बान्धवो निर्विकारः ।
जलदसमय एष प्राणिनां प्राणभूतो
दिशतु तव हितानि प्रायशो वाञ्छितानि ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीय सर्ग

शरद् - वर्णन

(१)

सित-काशांशुकवाली,
खिले पद्म-सा मनोज्ञ मुखवाली,
चरणों में बजते जिसके रुनझुन.
मदोन्मत्त-हंस-राव-नूपुर-स्वन,
पके धान-सी जिसकी सुन्दर तनु-गात्र-यष्टि
उतरी नव-वधू-सदृश रूपमयी शरत्-सृष्टि.

काशांशुका विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा
सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या ।
आपक्वशालिरुचिरा तनुगात्रयष्टिः
प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

खिले काश से अवनी,
चंद्र-प्रभा से रजनी,
हंसों से सरिता-जल,
कुमुदों से ताल सकल,
कुसुम-भार से अवनत सप्तपर्ण से वनांत,
श्वेत हुए खिली मालती से उद्यान-प्रांत.

काशैर्मही शिशिरदीधितिना रजन्यो
हंसैर्जलानि सरितां कुमुदैः सरांसि ।
सप्तच्छदैः कुसुमभारनतैर्वनान्ताः
शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः ॥

(३)

चंचल मछलियां बनीं जिसकी मेखला-रेख,
हंस आदि पक्षी वक्षस्थित सित हार-लेख,
विपुल पुलिन ही जिसके पृथु नितंब-बिंब-बंध
नदियां मदभरी चलीं प्रमदा-सी मंद-मंद.

चञ्चन्मनोज्ञशफरीरसनाकलापाः
पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपङ्क्तिहाराः ।
नद्यो विशालपुलिनान्तनितम्बबिम्बा
मन्दं प्रयान्ति समदाः प्रमदा इवाद्य ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

कहीं रजत शंख और
सित-मृणाल-वर्ण गौर
निर्जल हलके-हलके
पवन-वेग से चलते थके-थके
मेघों के चामर झलते जिस पर व्योम आज
लगता ज्यों कोई राजाधिराज.

व्योम क्वचिद्रजतशङ्खमृणालगौरै-
स्त्यक्ताम्बुभिर्लघुतया शतशः प्रयातैः ।।
संलक्ष्यते पवनवेगचलैः पयोदै
राजेव चामरवरैरुपवीज्यमानः ।।

(५)

कज्जल की ढेर-सदृश कांति लिये नभ विशाल,
धरणी जो बंधुजीव फूलों से लाल-लाल,
तट-तड़ाग
कमलों से आच्छादित भूमि-भाग
उत्कंठित कर देते मन:प्राण
भू में किस युवक का न ?

भिन्नाञ्जनप्रचयकान्ति नभो मनोज्ञं
बन्धूकपुष्परचितारुणता च भूमिः ।
वप्राश्च चारुकमलावृतभूमिभागाः
प्रोत्कण्ठयन्ति न मनो भुवि कस्य यूनः ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(६)

मंद अनिल से डालें जिसकी हैं रही डोल,
पुष्पोद्गम से नव पल्लव जिसके मृदुल लोल,
मतवाले मधुकर जिसका अनेक
पीते हैं मधु-प्रसेक
किसके मन को विदार
देता है कहो न धन ! कोविदार ?

मन्दानिलाकुलितचारुतराग्रशाखः
पुष्पोद्गमप्रचयकोमलपल्लवाग्रः ।
मत्तद्विरेफपरिपीतमधुप्रसेक-
श्चित्तं विदारयति कस्य न कोविदारः ॥

(७)

तारागण ही जिसके भूषण वर,
मेघों से मुक्त विमल शशिमुख जिसका सुन्दर,
ज्योत्स्ना का अंचल चल
करता जिसका झलमल
बढ़ती अनुदिन रजनी
प्रमदा बाला-जैसी ही सजनी !

तारागणप्रवरभूषणमुद्वहन्ती
मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा ।
ज्योत्स्नादुकूलममलं रजनी दधाना
वृद्धिं प्रयात्यनुदिनं प्रमदेव बाला ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

कारण्डव से जिनकी छिन्न-भिन्न वीचि-माल,
हंस-सारसों से व्याकुल जिनके तीर-जाल,
लाल किये जल को जिनके सरसिज-रेणु-चूर्ण —
हंसों के कलरव से
जन-मन को मधुर प्रीति-वैभव से
करतीं तटिनियां पूर्ण.

कारण्डवाननविघट्टितवीचिमालाः
कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः ।
कुर्वन्ति हंसविरुतैः परितो जनस्य
प्रीतिं सरोरुहरजोरुणितास्तटिन्यः ॥

(९)

नयनों का उत्सव जो,
हर्षजनक वैभव जो,
किरण-माल जिसकी उर को हरती,
शीतल जल-वर्षा जिससे झरती —
ऐसा यह चारु चंद्र
जला रहा है अतंद्र
प्रिय-वियोग-गरल-बुझे बाणों से जो हैं क्षत
विरहिणियों के अंगों को विधिवत्.

नेत्रोत्सवो हृदयहारिमरीचिमालः
प्रह्लादकः शिशिरसीकरवारिवर्षी ।
पत्युर्वियोगविषदिग्धशरक्षतानां
चन्द्रो दहत्यतितरां तनुमङ्गनानाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१०)

फल से नत धान-शस्य को कर कंपित थरथर,
कुसुम-नम्र-तरुओं को हिला नचाकर निर्भर,
खिले फूल जिनमें उन
पद्म-लताओं को झकझोर कठिन —
मरुत् चपल
तरुणों के मन को करता चंचल.

आकम्पयन्फलभरानतशालिजाला-
नानर्तयंस्तरुवरान्कुसुमावनम्रान् ।
उत्फुल्लपङ्कजवनां नलिनीं विधुन्व-
न्यूनां मनश्चलयति प्रसभं नभस्वान् ॥

(११)

मदोन्मत्त हंस-मिथुन से शोभित,
फुल्ल अमल कमलोत्पल से भूषित,
मंद-प्रात-पवन-जनित वीचि-माल से सुन्दर
उत्कंठित करते उर को द्रुत सर.

सोन्मादहंसमिथुनैरुपशोभितानि
स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि ।
मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमाला-
न्युत्कण्ठयन्ति सहसा हृदयं सरांसि ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१२)

नष्ट आज इंद्रधनुष,
गगन-ध्वजा तड़ित् चमकती न जलद में अकलुष,
पंख-पवन से न वलाका नभ को कंपा रही,
देखते न उन्नतमुख हो नभ को शिखी कहीं.

नष्टं धनुर्बलभिदो जलदोदरेषु
सौदामिनी स्फुरति नाद्य वियत्पताका ।
धुन्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाकाः
पश्यन्ति नोन्नतमुखा गगनं मयूराः ॥

(१३)

नृत्य-रहित जो मयूर उनका अब छोड़ संग
जाता मधु-स्वरवाले हंस जिधर हैं अनंग,
नीप, कुटज, अर्जुन औ साल पादपों को तज
कुसुमोद्गम-श्री जाती सप्तच्छद पास सहज.

नृत्यप्रयोगरहिताञ्छिखिनो विहाय
हंसानुपैति मदनो मधुरप्रगीतान् ।
मुक्त्वा कदम्बकुटजार्जुनसर्जनीपा-
न्सप्तच्छदानुपगता कुसुमोद्गमश्रीः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१४)

शेकाली-कुसुम-गंध से चिर लोभायमान,
शंका-भयहीन खगों से चिर गुंजायमान,
दूरस्थित मृगियों के दृक्-कमलों से सचकित
लोगों के मन को करते उपवन उत्कंठित.

शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि
स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि ।
पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि
प्रोत्कण्ठयन्त्युपवनानि मनांसि पुंसाम् ॥

(१५)

धुनकर कल्हार-कुमुद-पद्म-निकर बार-बार
औ उनके संगम से शीतलता पा अपार,
पत्र-प्रांत में अटके तुहिन-कणों से धुलकर
उत्कंठित करता है प्रात-समीरण निर्भर.

कह्लारपद्मकुमुदानि मुहुर्विधुन्वं-
स्तत्संगमादधिकशीतलतामुपेतः ।
उत्कण्ठयत्यतितरां पवनः प्रभाते
पत्रान्तलग्नतुहिनाम्बु विधूयमानः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१६)

खेतों में प्रचुर जहां लहराता धान-शस्य,
मैदानों में चरतीं गायें गतभय असंख्य,
हंस-सारसों से प्रतिनादित्त चिर जो अछोर
सीमान्तर करते हैं जन-जन को सुख-विभोर.

संपन्नशालिनिचयावृतभूतलानि
स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि ।
हंसैः ससारसकुलैः प्रतिनादितानि
सीमान्तराणि जनयन्ति नृणां प्रमोदम् ।।

(१७)

हंसों ने वनिताओं की मृदु सुललित गति को,
पद्मों ने शशिमुख की छवि-रति को,
नील उत्पलों ने मद-भरी मधुर चितवन को,
जीता लघु लहरों ने भौंहों के नर्त्तन को.

हंसैर्जिता सुललिता गतिरङ्गनाना-
मम्भोरुहैर्विकसितैर्मुखचन्द्रकान्तिः ।
नीलोत्पलैर्मदकलानि विलोकितानि
भ्र विभ्रमाश्च रुचिरास्तनुभिस्तरंगैः ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१८)

हरी लतायें कुसुमों से नत जिनके पल्लव
हरतीं आभूषणयुत वधुओं का भुज-सौष्ठव,
औ नवमालती सकंकेलि-पुष्प उसी भांति
हरती हैं दंत-छटायुत स्मित की चंद्र-कांति.

श्यामा लताः कुसुमभारनतप्रवालाः
स्त्रीणां हरन्ति धृतभूषणबाहुकान्तिम् ।
दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिं
कङ्केलिपुष्परुचिरा नवमालती च ।।

(१९)

कुंचित अत्यंत नील सघन केश में अतुल्य
भर नवमालती-फूल,
कर्णों में हैं जिनमें स्वर्ण-विनिर्मित कुंडल
लटकातीं वनितायें नीलोत्पल.

केशान्नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रा-
नापूरयन्ति वनिता नवमालतीभिः ।
कर्णेषु च प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु
नीलोत्पलानि विविधानि निवेशयन्ति ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२०)

हारों से, चन्दन-रस से अपने स्तन-मंडल,
विपुल मेखलाओं से श्रोणी-तट के अंचल,
सुघर नूपुरों से निज पद्म-चरण
सजा रहीं कामिनियां हर्षित-मन.

हारैः सचन्दनरसैः स्तनमण्डलानि
श्रोणीतटं सुविपुलं रसनाकलापैः ।
पादाम्बुजानि कलनूपुरशेखरैश्च
नार्यः प्रहृष्टमनसोऽद्य विभूषयन्ति ।।

(२१)

खिले हुए कुमुदों से परिव्याप्त,
राजमरालों से युत सुपर्याप्त,
मरकत-मणि-सम जल देता जिनको सुन्दरता
जलाशयों की अब शोभा धरता
व्योम पूर्ण मेघमुक्त
शशि-औ-नक्षत्रयुक्त.

स्फुटकुमुदचितानां राजहंसस्थितानां
मरकतमणिभासा वारिणा भूषितानाम् ।
श्रियमतिशयरूपां व्योम तोयाशयानां
वहति विगतमेघं चन्द्रताराबकीर्णम् ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२२)

कुमुदों को छू, हो शीतल समीर
बहता है धीर-धीर,
मेघों के हटने से स्वच्छ शांत
सुन्दर अब दिशा-प्रांत,
कलुष चले जाने से जल है अब निष्कलंक,
धरती में नहीं पंक,
शरत्-काल में निर्मल नभ पवित्र
विमल-किरण-चंद्रयुक्त ताराओं से विचित्र.

शरदि कुमुदसङ्गाद्वायवो वान्ति शीता
विगतजलदवृन्दा दिग्विभागा मनोज्ञाः ।
विगतकलुषमम्भः श्यानपङ्का धरित्री
विमलकिरणचन्द्रं व्योम ताराविचित्रम् ॥

(२३)

दिनकर की किरणों से प्रात-काल खिला अमल
युवती-मुख-मंडल-सा शोभित है आज कमल
और कुमुद भी शशि के होने पर अस्त लीन
प्रोषितपतिका-वधुओं के स्मित-सा आज क्षीण.

दिवसकरमयूखैर्बोध्यमानं प्रभाते
वरयुवतिमुखाभं पङ्कजं जृम्भतेऽद्य ।
कुमुदमपि गतेऽस्तं लीयते चन्द्रबिम्बे
हसितमिव वधूनां प्रोषितेषु प्रियेषु ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२४)

देख प्रियाओं की दृग्-श्री नव इन्दीवर में,
कनक-मेखला-ध्वनि सुन मत्त हंस के स्वर में,
मधुर-अधर-शोभा बंधूक फूल में लखकर
रोते हैं भ्रांत-चित्त पथिक प्रवासी निर्भर.

असितनयनलक्ष्मीं लक्षयित्वोत्पलेषु
क्वणितकनककाञ्चीं मत्तहंसस्वनेषु ।
अधररुचिरशोभां बन्धुजीवे प्रियाणां
पथिकजन इदानीं रोदिति भ्रान्तचित्तः ॥

(२५)

वनिताओं के मुख में शशि की शोभा अमंद,
मणि-नूपुर में सुमधुर हंसों का कंठ-छंद,
अधरों में छोड़ बंधुजीव-कुसुम-कांति भली
शरदागम-श्री अब लो ! कहीं चली !

स्त्रीणां विहाय वदनेषु शशाङ्कलक्ष्मीं
कामं च हंसवचनं मणिनूपुरेषु ।
बन्धूककान्तिमधरेषु मनोहरेषु
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA
क्वापि प्रयाति सुभगा शरदागमश्रीः ॥

(२६)

विकच-कमल-मुखवाली,
इंदीवर-हक्वाली
फुल्ल काश सित जिसका वसन भांति,
और कुमुद ही जिसकी रुचिर कांति
उन्मद-कामिनी-सदृश शरद्-दीप्ति
मन में तव उमड़ावे परम प्रीति.

विकचकमलवक्त्रा फुल्लनीलोत्पलाक्षी
विकसितनवकाशश्वेतवासो वसाना ।
कुमुदरुचिरकान्तिः कामिनीवोन्मदेयं
प्रतिदिशतु शरद्वश्चेतसः प्रीतिमग्र्याम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

चतुर्थ सर्ग

हेमन्त - वर्णन

(१)

नव-किसलय-शस्यराजि से जो शोभायमान,
खिले लोध, पके धान से जो लोभायमान,
म्लान कमल हैं जिसमें, झरते चिर तुहिन-जाल
आया हेमन्त-काल.

नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः
प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः ।
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो
हेमन्तकालः समुपागतोऽयम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

कुंकुम-रस-राग नवल
औ तुषार-कुंद-इंदु-वर्ण-सदृश हार धवल
विलासिनी वधुओं के बने सार
उर-मंडल-अलंकार.

मनोहरैः कुङ्कुमरागरक्तै-
स्तुषारकुन्देन्दुनिभैश्च हारैः ।
विलासिनीनां स्तनशालिनीना-
मलंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि ॥

(३)

वधुओं के भुजों का न अंगद औ वलय भव्य,
पृथुल नितंबों का न दुकूल नव्य,
पीन पयोधरों का न तन्वंशुक
संग-लाभ करते टुक.

न बाहुयुग्मेषु विलासिनीनां
प्रयान्ति सङ्गं वलयाङ्गदानि ।
नितम्बबिम्बेषु नवं दुकूलं
तन्वंशुकं पीनपयोधरेषु ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

सजातीं न प्रमदायें स्वीय नितंवों को वर
कांचन-मणि-चित्र-खचित कांची-गुण से प्रियतर,
हंस-मधुर-कलरवयुत नूपुर नव
बांधती न पद-पद्मों में हैं अब.

काञ्चीगुणैः काञ्चनरत्नचित्रै-
र्नो भूषयन्ति प्रमदा नितम्बम् ।
न नूपुरैर्हंसरुतं भजद्भिः
पादाम्बुजान्यम्बुजकान्तिभाञ्जि ॥

(५)

अंगों को जायक से चर्चित कर,
अंवुज-मुख को अपने पत्र-लता-अंचित कर
बालों को शिर के निज कालागुरु से धूपित
करतीं कामिनियां रति-उत्सव हित.

गात्राणि कालीयकचर्चितानि
सपत्रलेखानि मुखाम्बुजानि ।
शिरांसि कालागुरुधूपितानि
कुर्वन्ति नार्यः सुरतोत्सवाय ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(६)

रति के श्रम के कारण
जिनके मुख कृश विवर्ण
कामिनियां —
यद्यपि अति-हर्षयुक्त भामिनियां
दांतों से कटे हुए,
पीड़ा से फटे हुए
अपने जब मधुर अधर हैं लखती
अट्टहास कर न आज हँस सकतीं.

रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः
संप्राप्तहर्षाभ्युदयास्तरुण्यः ।
हसन्ति नोच्चैर्दशनाग्रभिन्ना-
न्प्रपीड्यमानानधरानवेक्ष्य ॥

(७)

पीन उरोजों के जो उरस्थल पर रहे राज-
मर्दित होने से होकर अतिशय दुखित आज
रुदन कर रहा मानों प्रात-समय शीत-काल
लगता ऐसा तृण पर देख बिछा तुहिन-जाल.

पीनस्तनोरःस्थलभागशोभा-
मासाद्य तत्पीडनजातखेदः ।
तृणाग्रलग्नैस्तुहिनैः पतद्भि-
राक्रन्दतीवोषसि शीतकालः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

धान-शस्य से जो आवृत प्रभूत,
विचर रहे हैं जिनमें मृगी-यूथ,
कलरव भर रहे जहां क्रौंच सुघर
उत्सुक देते कर मन सीमांतर.

प्रभूतशालिप्रसवैश्चितानि
　　मृगाङ्गनायूथविभूषितानि ।
मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि
　　सीमान्तराण्युत्सुकयन्ति चेतः ॥

(९)

खिले नीलकमलों से शोभित जो,
उन्मद कलहंसों से भूषित जो,
निर्मल-जलवाले सर शीतल हर
लेते अब पुरुषों का मन सत्वर.

प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि
　　सोन्मादकादम्बविभूषितानि ।
प्रसन्नतोयानि सुशीतलानि
　　सरांसि चेतांसि हरन्ति पुंसाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१०)

तुहिन-जन्य-शीत हेतु पकी हुई,
मारुत से झकझोरी थकी हुई,
देखो तो यह प्रियंगु-लता प्रिये !
विरहवती विलासिनी-सी ही पांडुता लिये.

पाकं व्रजन्ती हिमजातशीतै-
राधूयमाना सततं मरुद्भिः ।
प्रिये ! प्रियङ्गुः प्रियविप्रयुक्ता
विपाण्डुतां याति विलासिनीव ॥

(११)

पुष्पासव पीने से मुख जिनका गंधसिक्त,
निःश्वासों से जिनका अंग-अंग सुरभिलिप्त,
सरस-काम-रस से अनुविद्ध लोग
लिपट परस्पर से सोकर करते संग-भोग.

पुष्पासवामोदिसुगन्धिवक्त्रो
निःश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः ।
परस्पराङ्गव्यतिरिक्तशायी
शेते जनः कामरसानुविद्धः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१२)

दांतों से किये गये चिह्नों से युक्त अधर
और नखों के अभिलेखों से युत उरज सुघर
नव-यौवनवतियों का निर्दय संगोपभोग
संसूचित करते अंगोपयोग.

दन्तच्छदैः सव्रणदन्तचिह्नैः
स्तनैश्च पाण्यग्रकृताभिलेखैः ।
संसूच्यते निर्दयमङ्गनानां
रतोपयोगो नवयौवनानाम् ॥

(१३)

कोई वनिता लेकर कर में आदर्श अमल
बालातप में संवारती अपना वदन-कमल
और मधुर प्रियतम ने जिसका है पिया सार
दांतों से कटा हुआ अधर देखती निकाल.

काचिद्विभूषयति दर्पणसक्तहस्ता
बालातपेषु वनिता वदनारविन्दम् ।
दन्तच्छदं प्रियतमेन निपीतसारं
दन्ताग्रभिन्नमवकृष्य निरीक्षते च ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१४)

अति रति-श्रम से तन जिसका प्रशिथिल श्रांत-क्लांत,
जगने से रात्रि सकल नेत्र-कमल रक्त कांत,
खुलने से केश-पाश
लोट रहे अलक विकल स्कंध-देश आस-पास
स्त्री कोई
मृदुल सूर्य-आतप में है सोई.

अन्या प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा
रात्रिप्रजागरविपाटलनेत्रपद्मा ।
स्रस्तांसदेशलुलिताकुलकेशपाशा
निद्रां प्रयाति मृदुसूर्यकराभितप्ता ॥

(१५)

निकल गयी है जिनसे मधुर गंध
टूटे जो फूलों के हार-बंध
शिर से निज दूर हटा
नये पुष्पहारों से कामिनियां जिनके तन
झुके हुए पीन स्तनों के कारण
सजा रहीं कृष्ण सघन केशों की घोर घटा.

निर्माल्यदाम परिमुक्तमनोज्ञगन्धं
मूर्ध्नोऽपनीय घननीलशिरोरुहान्ताः ।
पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्टयः
कुर्वन्ति केशरचनामपरास्तरुण्यः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१६)

अन्य एक नख से क्षत जिसके हैं अंग-अंग,
लंब नील कच जिसके खेल रहे आँख-संग —
देख स्वीय प्रिय से उपभुक्त गात्र
हर्ष-प्रवण
रंगकर निज अधर-पात्र
चोली निज रही पहन.

अन्या प्रियेण परिभुक्तमवेक्ष्य गात्रं
हर्षान्विता विरचिताधरचारुशोभा ।
कूर्पासकं परिदधाति नखक्षताङ्गी
व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी ॥

(१७)

अन्य स्त्रियां
प्रमदायें सुन्दरियां
अति रति-श्रम के कारण
खिन्न तथा प्रशिथिल-तन
ऊरु और स्तन जिनके पुलकित रोमांच लिये
रचतीं अभ्यंग प्रिये !

अन्याश्चिरं सुरतकेलिपरिश्रमेण
खेदं गताः प्रशिथिलीकृतगात्रयष्टयः ।
संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ता
अभ्यञ्जनं विदधति प्रमदाः सुशोभाः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१८)

बहु-गुण-रमणीय शांत,
वधुओं का मन हरनेवाला कमनीय कांत,
पके हुए धान-शस्य से नितांत
व्याकुल जिसमें सारा ग्राम-प्रांत,
दिखता है जो मनोज्ञ धरकर वर क्रौंच-माल
सुख दे तुमको यह हेमंत-काल.

बहुगुणरमणीयो योषितां चित्तहारी
परिणतबहुशालिव्याकुलग्रामसीमा ।
सततमतिमनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः
प्रदिशतु हिमयुक्तः काल एषः सुखं वः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

पंचम सर्ग

शिशिर - वर्णन

(१)

पकी हुई धान-बालियों से शोभायमान,
यहां-वहां क्रौंच-शब्द से चिर गुंजायमान,
प्रखर कामयुत जो, प्रमदाओं का प्रिय रसाल
आया लो ! अब वरोरु ! शिशिर-काल.

प्ररूढशाल्यंशुचयैर्मनोहरं
क्वचित्स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम् ।
प्रकामकामं प्रमदाजनप्रियं
वरोरु ! कालं शिशिराह्वयं शृणु ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

बंद झरोखोंवाले भवनों के गर्भ-देश,
अग्नि और रवि की किरणें अशेष,
मोटे परिधान और यौवनवतियां ये सब
लोगों के सेवनीय शिशिर-काल में हैं अब.

निरुद्धवातायनमन्दिरोदरं
हुताशनो भानुमतो गभस्तयः ।
गुरूणि वासांस्यबलाः सयौवनाः
प्रयान्ति कालेऽत्र जनस्य सेव्यताम् ॥

(३)

चंद्र-किरण-सा शीतल चंदन अब समुत्कृष्ट,
शरत्-इंदु-सम निर्मल हर्म्यपृष्ठ,
घन-तुषार से शीतल वायु नित्य
हर्षित करते जन के नहीं चित्त.

न चन्दनं चन्द्रमरीचिशीतलं
न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम् ।
न वायवः सान्द्रतुषारशीतला
जनस्य चित्तं रमयन्ति सांप्रतम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

घन-तुषार गिरने से अविरत फिर
हिमकर की किरणों से शीतल चिर
पांडुर तारागण से समलंकृत
रात्रियां न सेवनीय अब किंचित्.

तुषारसंघातनिपातशीतलाः
शशाङ्कभाभिः शिशिरीकृताः पुनः ।
विपाण्डुतारागणजिह्मभूषिता
जनस्य सेव्या न भवन्ति रात्रयः ॥

(५)

खाकर तांबूल, लगा लेपन, धारण कर स्रज
सुखकर आसव पीकर, सुरभित कर मुख-पंकज,
कामिनियां उत्सुक हो
कालागुरु-स्निग्ध-गंध से अशेष
वासित जो
शयन-गृहों में करती हैं प्रवेश.

गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः
सुखासवामोदितवक्त्रपङ्कजाः ।
प्रकामकालागुरुधूपवासितं
विशन्ति शय्यागृहमुत्सुकाः स्त्रियः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(६)

जिनने अपराध किये,
तर्जित बहु बार हुए,
कम्पयुक्त,
भय के कारण जिनके चित्त लुप्त –
ऐसे रति-अभिलाषी पतियों को देख अभी
भूल रहीं प्रमदायें पिछले अपराध सभी.

कृतापराधान्बहुशोऽपि तर्जिता-
न्सवेपथून्साध्वसलुप्तचेतसः ।
निरीक्ष्य भर्तॄन्सुरताभिलाषिणः
स्त्रियोऽपराधान्समदा विसस्मरुः ॥

(७)

कामी युवकों से जो निर्दयतर
दीर्घ निशाओं में चिर भोगी हैं गयी प्रचुर
डोल रहीं मंद-मंद नव-यौवनवती-निचय
रात्रि-शेष में श्रम-परिखिन्न-हृदय.

प्रकामकामैर्युवभिः सनिर्दयं
निशासु दीर्घास्वभिरामिताश्चिरम् ।
भ्रमन्ति मन्दं श्रमखेदितोरसः
क्षपावसाने नवयौवनाः स्त्रियः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

रुचिर चोल से वक्षस्थल कसकर,
रंगा हुआ कोसे का वस्त्र हृदय पर रखकर,
केशों के भीतर धर कुसुम-माल
मानों हैं सजा रहीं कामिनियां शिशिर-काल.

मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः
सरागकौशेयकभूषितोरसः ।
निवेशितान्तःकुसुमैः शिरोरुहै-
र्विभूषयन्तीव हिमागमं स्त्रियः ।।

(९)

कुंकुम-रस-रंजित अति पीत वर्ण,
परम सुखद, नवयौवन हेतु उष्ण
पयोधरों से विलासवतियों के हृदय लगा
कामीजन सोते हैं शीत भगा.

पयोधरैः कुङ्कुमरागपिञ्जरैः
सुखोपसेव्यैर्नवयौवनोष्मभिः ।
विलासिनीभिः परिपीडितोरसः
स्वपन्ति शीतं परिभूय कामिनः ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१०)

गंधयुक्त निःश्वासों से जिसके उत्पल चल,
सुन्दर अति, कामजनक उत्तम मधु उन्मदकर
पीतीं रमणियां मधुर
रात्रि-समय में कामीजन-सह अति हर्षित-उर.

सुगन्धिनिःश्वासविकम्पितोत्पलं
मनोहरः कामरतिप्रबोधकम् ।
निशासु हृष्टाः सह कामिभिः स्त्रियः
पिबन्ति मद्यं मदनीयमुत्तमम् ।।

(११)

प्रातकाल वधू एक
छूटा है जिसका मदजन्य राग
आलिंगन हेतु निबिड़ जिसके स्तन-अग्रभाग
प्रिय से भोगी अपनी देह देख
तजकर निज शयन-वास
अन्य वास को है जाती सहास.

अपगतमदरागा योषिदेका प्रभाते
कृतनिबिडकुचाग्रा पत्युरालिङ्गनेन ।
प्रियतमपरिभुक्तं वीक्षमाणा स्वदेहं
व्रजति शयनवासाद्वासमन्यं हसन्ती ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१२)

बिखराकर अगुरु-सुरभि-धूपयुक्त केश-जाल
कुंचिताग्र जो, झरती है जिससे कुसुम-माल,
गुरु नितंब हैं जिसके, निम्न सुघर मध्य-भाग
अन्य सुन्दरी करती प्रातकाल शयन त्याग.

अगुरुसुरभिधूपामोदितं केशपाशं
गलितकुसुममालं तन्वती कुञ्चिताग्रम् ।
त्यजति गुरुनितम्बा निम्नमध्यावसाना
उषसि शयनमन्या कामिनी चारुशोभाम् ॥

(१३)

अभी-धुले-हुए-सदृश सुन्दर ज्यों कनक-कमल
जिनके मुख-बिंब अमल,
कानों तक खिंचे हुए पाटल-सम नेत्र-युगल.
स्कंधों पर बिछे हुए जिनके घन कुंतल चल —
लक्ष्मी-सी ऐसी रमणियां आज
प्रात-समय गृह-गृह में रहीं राज.

कनककमलकान्तैः सद्य एवाम्बुधौतैः
श्रवणतटनिषक्तैः पाटलोपान्तनेत्रैः ।
उषसि वदनबिम्बैरंससंसक्तकेशैः
श्रिय इव गृहमध्ये संस्थिता योषितोऽद्य ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१४)

पृथुल-जघन-भार हेतु जो हैं अत्यंत दुखी,
कटि जिनकी स्वल्प झुकी,
वक्ष-भार कारण जो निरानंद
चलतीं मृदु मंद-मंद
निशि का रति-वेश त्याग कर अशेष
धारण करतीं वधुएं शीघ्र दिवस-योग्य वेश.

पृथुजघनभरार्ताः किंचिदानम्रमध्याः
स्तनभरपरिखेदान्मन्दमन्दं व्रजन्त्यः ।
सुरतसमयवेशं नैशमाशु प्रहाय
दधति दिवसयोग्यं वेषमन्यास्तरुण्यः ॥

(१५)

देख रही हैं अपने नख से अंकित स्तनाग्र
जो सराग,
छूतीं जो हाथों से
अधर-किसलयों को जो कटे हुए दांतों से —
अभिमत इस रस को अभिनंदित करती अपार
वधुएं आनन अपने सजा रहीं प्रातकाल.

नखपदचितभागान्वीक्षमाणाः स्तनाग्रा-
नधरकिसलयाग्रं दन्तभिन्नं स्पृशन्त्यः ।
अभिमतरसमेतं नन्दयन्त्यस्तरुण्यः
सवितुरुदयकाले भूषयन्त्याननानि ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१६)

गुड़ का उत्पादक जो,
ईख-धान-शस्यों से सुन्दर आल्हादक जो,
काम-केलि जब कि प्रबल,
दर्पयुक्त मदन सबल,
विरहिणियों के हृदयों को समस्त
करता जो ताप-ग्रस्त —
ऐसा यह शिशिर-समय
करे तुम्हारा चिर कल्याण सदय.

प्रचुरगुडविकारः स्वादुशालीक्षुरम्यः
प्रबलसुरतकेलिर्जातकंदर्पदर्पः ।
प्रियजनरहितानां चित्तसंतापहेतुः
शिशिरसमय एष श्रेयसे वोऽस्तु नित्यम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठ सर्ग

वसन्त - वर्णन

(१)

आम्र-मुकुल ही जिसके तीक्ष्ण बाण,
भ्रमर-पंक्ति ही धनु का गुण प्रमाण
कामीजन के मन को करने को विद्ध प्रिये !
आगत यह लो ! वसंत योद्धा का वेश लिये.

प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायको
द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः ।
मनांसि वेद्धुं सुरतप्रसङ्गिनां
वसंतयोद्धा समुपागतः प्रिये ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

पुष्पयुक्त तरुगण औ पद्मयुक्त निर्मल जल,
काम‌युक्त कामिनियां, गंधयुक्त मारुत चल,
सुखकर अति सांध्य समय
और रम्य दिवस-निचय —
सुन्दरतर
प्रिये ! सभी कुछ वसन्त में निर्भर.

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः ।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः
सर्वं प्रिये ! चारुतरं वसन्ते ॥

(३)

सरसी-जल को, मणि-करधनियों को,
शशि की द्युति को, रमणी-मणियों को,
आम्र द्रुमों को इन जो कुसुमवन्त
सखि ! यह सौभाग्य दे रहा वसन्त.

वापीजलानां मणिमेखलानां
शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम् ।
चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानां
ददाति सौभाग्यमयं वसन्तः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

नव-कुसुंभ-राग-रंगे वस्त्र से नितंब घने
केसर से रंगे लाल अंशुक से स्तन अपने
करती समलंकृत अब
हैं विलासवतियां सब.

कुसुम्भरागारुणितैर्दुकूलै-
नितम्बबिम्बानि विलासिनीनाम् ।
रक्तांशुकैः कुङ्कुमरागगौरै-
रलंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि ॥

(५)

कानों में लगे हुए
योग्य कर्णिकार नये
और नील अलकों में रहे झूल
जो नवमल्लिका और वंजुल के खिले फूल.
कामिनियों को अनुपम
देते हैं कांति परम.

कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं
चलेषु नीलेष्वलकेष्वशोकम् ।
पुष्पं च फुल्लं नवमल्लिकायाः
प्रयाति कान्ति प्रमदाजनानाम् ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(६)

कठिन उरोजों पर सित चन्दन से आर्द्र हार,
बांहों पर वलयांगद-अलंकार.
जघनों पर अधोवास
झलक रहे हैं सलास
पृथु-नितंबवतियों के —
काम-व्यथातुर-मानस-मतियों के.

स्तनेषु हाराः सितचन्दनार्द्रा
भुजेषु सङ्गं वलयाङ्गदानि ।
प्रयान्त्यनङ्गातुरमानसानां
नितम्बिनीनां जघनेषु काञ्चयः ॥

(७)

कनक-कमल-सदृश सुघर
वर विलासवतियों के पत्रलेखयुत मुख पर
रत्नों के साथ सजे मुक्ताफल संग रम्य
स्वेदकणों का मिलता तारतम्य.

सपत्रलेखेषु विलासिनीनां
वक्त्रेषु हेमाम्बुरुहोपमेषु ।
रत्नान्तरे मौक्तिकसङ्गरम्यः
स्वेदागमो विस्तरतामुपैति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

जिनके परिधान शिथिल
काम-विकल अंगों को लहराकर दिखा निखिल
निकटवर्त्ति प्रिय के प्रति
होती हैं कामिनियां आज समुत्सुक-सी अति.

उच्छ्वासयन्त्यः श्लथबन्धनानि
गात्राणि कंदर्पसमाकुलानि ।
समीपवर्तिष्वधुना प्रियेषु
समुत्सुका एव भवन्ति नार्यः ॥

(९)

पांडुर कृश तन जिनके आलस से भरे शिथिल,
जो कि जंभाई लेती हैं फिर-फिर —
ऐसी प्रमदाओं के अंगों को देता कर
लो ! अनंग सुन्दर संवेग-प्रखर.

तनूनि पाण्डूनि समन्थराणि
मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि ।
अङ्गान्यनङ्गः प्रमदाजनस्य
करोति लावण्यससंभ्रमाणि ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१०)

मदिरालस नयनों में सहज लोल,
गालों में गौर और कठिन स्तनों में कठोर,
मध्य भाग में गभीर,
जघनों में पीन धीर —
वधुओं के अंगों में कामराज
कई प्रकारों में लो ! करता है वास आज.

नेत्रेषु लोलो मदिरालसेषु
गण्डेषु पाण्डुः कठिनः स्तनेषु ।
मध्येषु निम्नो जघनेषु पीनः
स्त्रीणामनङ्गो बहुधा स्थितोऽद्य ।।

(११)

अंगों को निद्रालस-विभ्रमवश,
वाक्यों को अल्प-अल्प मद-लालस,
चितवन को अविरल-भ्रू-क्षेप-कुटिल—
कामिनियों के करता काम अखिल.

अङ्गानि निद्रालसविभ्रमाणि
वाक्यानि किंचिन्मदलालसानि ।
भ्रूक्षेपजिह्मानि च वीक्षितानि
चकार कामः प्रमदाजनानाम् ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१२)

मद से आलस विलासवतियां धन !
गौर स्तनों में करतीं आलेपन
कुंकुम-जायक-प्रियंगुयुक्त सरस
कस्तूरी के समेत चंदन-रस.

प्रियङ्गुकालीयककुङ्कुमाक्तं
स्तनेषु गौरेषु विलासिनीभिः ।
आलिप्यते चन्दनमङ्गनाभि-
र्मदालसाभिर्मृगनाभियुक्तम् ।।

(१३)

तजकर गुरु वास तूर्ण,
लाक्षा-रस-रंजित जो,
गंधयुक्त कृष्ण-अगुरु-धूप-सुरभि-व्यंजित जो
सूक्ष्म वसन
धरते जन
अंग-अंग हैं जिनके काम-मदालसप्रपूर्ण.

गुरूणि वासांसि विहाय तूर्णं
तनूनि लाक्षारसरञ्जितानि ।
सुगन्धिकालागुरुधूपितानि
धत्ते जनः काममदालसाङ्गः ।।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१४)

आम्र-रसासव पी हो मत्त प्रीति-हर्ष-मुखर
पिकी-प्रिया के मुख पर देता पिक चुम्बन धर,
मधुकर भी अंबुज पर गुंजन कर गीत-रचन
भ्रमरी प्रति कहता प्रिय चाटु वचन.

पुंस्कोकिलश्चूतरसासवेन
मत्तः प्रियां चुम्बति रागहृष्टः ।
कूजद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः
प्रियं प्रियायाः प्रकरोति चाटु ॥

(१५)

ताम्र-नवल-पल्लव-वहु-स्तबकों के भार विनत
पुष्पित-शाखावलियुत
मंद पवन से कंपित
करते हैं आम्रवृक्ष रमणी-मन उत्कंठित.

ताम्रप्रवालस्तबकावनम्रा-
श्चूतद्रुमाः पुष्पितचारुशाखाः ।
कुर्वन्ति कामं पवनावधूताः
पर्युत्सुकं मानसमङ्गनानाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१६)

नीचे से ऊपर तक विद्रुम से लाल-लाल,
फूलों से भरे हुए पल्लवयुत डाल-डाल
मात्र देखने पर ही ये अशोक
नव-यौवनवतियों के उर को करते सशोक.

आ मूलतो विद्रुमरागताम्रं
सपल्लवाः पुष्पचयं दधानाः ।
कुर्वन्त्यशोका हृदयं सशोकं
निरीक्ष्यमाणा नवयौवनानाम् ॥

(१७)

मत्त-भ्रमर-चुम्बित जिनके सुचारु पुष्प-जाल,
मन्द अनिल से विदुलित जिनके नत मृदु प्रवाल
दर्शनीय सुन्दर अति आम्र-मुकुल-मंजरियां
कामी-मन को करतीं सहसा उत्सुक कलियां.

मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पा
मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः ।
कुर्वन्ति कामिमनसां सहसोत्सुकत्वं
चूताभिरामकलिकाः समवेक्ष्यमाणाः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(१८)

कुरबक-तरु-मंजरियों को जिनकी रम्य छटा
कांता-मुख-कांति रही है प्रकटा
देख प्रिये ! आज भला किस सहृदय का न चित्त
होता है काम-बाण-व्यथा-सिक्त ?

कान्तामुखद्युतिजुषामपि चोद्‌गतानां
शोभां परां कुरबकद्रुममञ्जरीणाम् ।
दृष्ट्वा प्रिये ! सहृदयस्य भवेन्न कस्य
कंदर्पबाणपतनव्यथितं हि चेतः ॥

(१९)

दीप्त वह्नि-सम प्रोज्ज्वल,
मारुत से कंपित चल
कुसुम-भार से अवनत किंशुक-वन से अवनी
व्याप्त घनी
मधुऋतु में दिखती है आज सरस
रक्त वसन पहनी नव-वधू-सदृश.

आदीप्तवह्निसदृशैर्मरुतावधूतैः
सर्वत्र किंशुकवनैः कुसुमावनम्रैः ।
सद्योवसन्तसमये हि समाचितेयं
रक्तांशुका नववधूरिव भाति भूमिः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२०)

शुक-मुख-सम किंशुक से क्या न हुआ छिन्न भला,
कर्णिकार कुसुमों से वह न जला,
वेघ रहे जो फिर कोकिल के ये सुमधुर स्वन
रूपवती-मुख-विमुग्ध तरुणों का मनोकरण ?

किं किंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्न भिन्नं
किं कर्णिकारकुसुमैर्न कृतं नु दग्धम् ॥
यत्कोकिलः पुनरयं मधुरैर्वचोभि-
र्यूनां मनः सुवदनानिहितं निहन्ति ॥

(२१)

हर्ष-मत्त कोकिल के कुहू-कुहू कूजन से,
मदोन्मत्त भ्रमरों के गुन-गुन-गुन गुंजन से
कुल-गृह में भी क्षण में होता है विकल हृदय
वधुओं का जो सलज्ज औ सविनय.

पुंस्कोकिलैः कलवचोभिरुपात्तहर्षैः
कूजद्भिरुन्मदकलानि वचांसि भृङ्गैः ।
लज्जान्वितं सविनयं हृदयं क्षणेन
पर्याकुलं कुलगृहेऽपि कृतं वधूनाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२२)

कंपा आम की कुसुमित शाखावलियों को चिर,
वितर दिशाओं में मधु-कोकिल-गिर,
कर जन-जन-हृदय हरण
करता अब मन्द समीरण विचरण
तुहिनपात के व्यतीत होने पर
नब वसन्त में सुखकर.

आकम्पयन्कुसुमिताः सहकारशाखा
विस्तारयन्परभृतस्य वचांसि दिक्षु ।
वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणां
नीहारपातविगमात्सुभगो वसन्ते ॥

(२३)

खिले जहां कुन्द धवल
विभ्रमयुत वधुओं के शुभ्र हास-से अविकल
ऐसे उपवन सुन्दर
लेते हैं वीतराग मुनियों के भी मन हर
उससे भी किन्तु प्रथम
युवकों के रागप्रवण चित्त चरम.

कुन्दैः सविभ्रमवधूहसितावदातै-
रुद्द्योतितान्युपवनानि मनोहराणि ।
चित्तं मुनेरपि हरन्ति निवृत्तरागं
प्रागेव रागमलिनानि मनांसि यूनाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२४)

लम्बित कटि में जिनकी स्वर्ण-मेखला सुन्दर,
हार झूलते उर पर,
काम-वेग से प्रशिथिल
देह-लतायें दुर्बल,
अलि-पिक कर मधुर नाद
देते हैं जिन्हें साथ —
ऐसी कामिनियां हरतीं दुरन्त
चैत्र मास में पुरुषों के उर निर्भर तुरन्त.

आलम्बिहेमरसनाः स्तनसक्तहाराः
कंदर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्टचः ।
मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादै-
र्नार्यो हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् ॥

(२५)

भूषित हैं प्रांत-भाग पुष्प-द्रुमों से अशेष,
हर्षित-पिक-स्वर से गुंजित जिनके सानुदेश,
छाये जिन पर बर शैलेय-जाल,
शोभित जिनमें अनेक रम्य शिलातल विशाल —
ऐसे गिरिवर लखकर
मुदित सभी जन निर्भर.

नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्ता-
न्हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान् ।
शैलेयजालपरिणद्धशिलातलौघा-
न्दृष्ट्वा जनः क्षितिभृतो मुदमेति सर्वः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२६)

कांता के असह विरह के कारण खिन्न-हृदय
पथिक देख मुकुलों से भरे आम्र-वृक्ष-निचय
नेत्र मूंदता, रोता, करता है बहुत शोक
हाथों से अपनी वह नाक रोक,
उच्च स्वरों से अमाप
करता अति आकुल होकर विलाप.

नेत्रे निमीलयति रोदिति याति शोकं
घ्राणं करेण विरुणद्धि विरौति चोच्चैः ।
कान्तावियोगपरिखेदितचित्तवृत्ति-
र्दृष्ट्वाध्वगः कुसुमितान्सहकारवृक्षान् ॥

(२७)

मत्त-मधुप-पिक-स्वर से
कुसुमित सहकार और कर्णिकार तरुवर से
तीक्ष्ण शरों से मानों कुसुम-मास
करता है अमित आज
मानिनियों के मन को विकल-व्यथित
कामोद्दीपन के हित.

समदमधुकराणां कोकिलानां च नादैः
कुसुमितसहकारैः कर्णिकारैश्च रम्यः ।
इषुभिरिव सुतीक्ष्णैर्मानसं मानिनीनां
तुदति कुसुममासो मन्मथोद्वेजनाय ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

(२८)

आम्र-मंजरी वर शर, किंशुक धनु रक्त नवल,
अलिकुल धनु-गुण जिसका, चन्द्र छत्र-सा अविकल,
मलयानिल गज प्रमत्त,
पिक-कुल बंदी समस्त —
लोकजयी अतनु संग में है जिसके वसन्त
तुमको कल्याण परम दे अनन्त.

आम्रीमञ्जुलमञ्जरीवरशरः सत्किंशुकं यद्धनु-
र्ज्या यस्यालिकुलंकलङ्करहितं छत्रं सितांशुः सितम् ।
मत्तेभो मलयानिलः परभृतो यद्बन्दिनो लोकजि-
त्सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वितः ॥

———

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

शुद्धि-पत्र

आमुख

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५	जैसा	जैसी

ग्रीष्मवर्णन

श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	(हि) १	प्रवर	प्रवर	२०	(हि) १,३	जिनकी	जिसकी
४	(हि) ३	द्रव्यों	द्रव्यों	२०	(हि) ६	मारते	मारता
५	(सं) ३	पदे पवे	पदे पदे	,,	(हि) ६	प्यासे	प्यासा
६	(सं) १	पयोघरा	पयोधरा	२२	(हि) १,२,३	जिसके	जिनके
१२	(स) १	वीक्षित	वीक्षितै	२२	(सं) २	वेगो	वेगो
१३	(हि) २	अव	अब	२३	(हि) ६	घूम रहीं	घूम रहे
१३	(सं) ३	अवाङ्	अवाङ्	,,	,,	ढूंढ़ रहीं	ढूंढ़ रहे
१५	(हि) १	सूख	सूखी	२६	(सं) १	वनेषु	वनेषु

प्रावृट्वर्णन

श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	(हि) ४	फला	फैला	१३	(हि) ४	वह	वह
६	(हि) २	व्यग्र	व्यग्र	१३	(सं) २	भुणंग	भुजंग
७	(हि) ४	दु:शींलायें	दु:शीलाएँ	१५	(स) १	स्वनै	स्वनै
८	(सं) ४	न्युव्गत	न्युद्गत	२६	(सं) १	जलकल	जलकण
९	(हि) ४	करते	करता	२७	(हि) ५	आल्हादित	आह्लादित
१०	(सं) १	सुच्चै	मुच्चै				

शरद्वर्णन

श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	(हि) १	जिसकी	जिनकी	१४	(सं) ४	यन्त्पु	यन्त्यु
३	(हि) ३	जिसके	जिनके	१५	(हि) १	कल्हार	कह्लार
४	(हि) १	रजत	रजत,	१५	(सं) ४	म्बु वि	म्बुवि
१४	(हि) १	शेकाली	शेफाली				

शिशिरवर्णन

श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	(सं) ४	चारुशोभाम्	चारुशोभा	१६	(हि) २	आल्हादक	आह्लादक
१४	(हि) २	झुको	झुकी				

वसंतवर्णन

श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	श्लोक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	(सं) २	वक्रेपु	वक्त्रेपु	२२	(हि) ६	नब	नव
१६	(हि) १	विद्रुम से	विद्रुम-से	२३	(हि) २	विभ्रम	विभ्रम
२१	(हि) २	मृङ्गः	भृङ्गः				

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA